वनस्पतिशास्त्र का बोझिल पाठ्यक्रम

डॉ. ओ.पी. जोशी व डॉ. जयश्री सिक्का

वर्तमान सत्र में अन्य विषयों के साथ-साथ वनस्पतिशास्त्र विषय में स्नातक प्रथम वर्ष के एकीकृत पाठ्यक्रम का पुनः निरीक्षण किया गया है। नया पाठ्यक्रम बोझिल तो है ही कई स्थानों पर विसंगतिपूर्ण भी है। बोझिल इसलिए कि पुराने पाठ्यक्रम से कुछ अध्याय हटाए बगैर नए अध्याय जोड़ दिए गए हैं। जोड़े गए कई नए अध्याय काफी उच्चस्तरीय हैं व उन्हें स्नातकोत्तर कक्षाओं में पढ़ाया जाना ही उचित है, मसलन द्वितीय प्रश्नपत्र की प्रथम इकाई के कुछ अध्याय जैसे फायलोजिनी ऑफ एन्जियोस्पर्म, मॉडर्न ट्रेंड्स इन टेक्सानॉमी और इंटरनेशनल रूल फॉर प्लांट नामेनक्लेचर आदि।

प्रथम प्रश्नपत्र की पांच इकाइयों में कुल 22 अध्याय शामिल किए गए हैं। एल्गी, फंजाई, ब्रायोफाइटा, टेरिडोफाइटा एवं जिम्नोस्पर्म समूहों के गुणों को जानना तो ठीक है परन्तु नए वर्गीकरण ही पढ़ाए जाने चाहिए। एल्गी से लेकर जिम्नोस्पर्म तक 17 विभिन्न प्रकार के पौधों का जीवनचक्र शामिल किया गया है जो काफी अधिक है। पौधों के प्रत्येक समूह से केवल एक या दो पौधों का जीवनचक्र उस समूह के प्रतिनिधि के बतौर पढ़ाया जाना पर्याप्त है। पांचवी इकाई के सभी अध्याय वनस्पति विज्ञान की अलग-अलग शाखाओं से सम्बंधित है। जैसे प्लांट क्वारन्टाइन एवं प्लांट डिसीज़ मैनेजमैंट पेथालॉजी के, मशरूम कल्चर फेजाई के और प्लांट एज़ बायोइंडिकेटर इकोलॉजी से सम्बंधित है। प्रारंभिक पाठ्यक्रम में इकोलॉजी को कहीं भी स्थान नहीं दिया गया है। अतः बगैर पर्यावरण एवं प्रदूषण की जानकारी के प्लांट इंडिकेटर की समझ किस प्रकार विकसित होगी? पांचवी इकाई का पांचवा अध्याय मार्फोलॉजी का है। इस अध्याय का पूरा सम्बंध द्वितीय प्रश्नपत्र की दूसरी इकाई में दर्शाए कुलों के अध्ययन से है। अतः इसे कुलों के अध्ययन के साथ ही रखा जाना था।

द्वितीय प्रश्नपत्र की प्रथम इकाई के कुछ अध्याय स्नातकोत्तर स्तर के हैं एवं इनकी चर्चा प्रारम्भ में ही की जा चुकी है। तृतीय इकाई के अध्याय चार में एबनॉर्मल सेकेण्ड्री ग्रोथ के उदाहरणों में निक्टेंथस तने का उदाहरण दिया गया है जो कि पूरी तरह से गलत है क्योंकि इस तने में एबनॉर्मल सेकेण्ड्री ग्रोथ होती ही नहीं है। इसी प्रश्नपत्र की पांचवी इकाई में वे सारे अध्याय बिल्कुल ऐसे ही रख दिए गए हैं जो वर्तमान में बी.एस.सी. तृतीय वर्ष के प्रथम प्रश्नपत्र की पांचवी इकाई में हैं।

इसी प्रकार प्रायोगिक कार्य में भी विसंगति है। पांच अंक प्रोजेक्ट कार्य हेतु रखे गए हैं और इस हेतु जो अध्याय दर्शाए गए हैं उनसे सम्बंधित पाठ किसी भी प्रश्नपत्र में नहीं हैं। जैसे बायोजियोकेमीकल सायकल तथा इकोलॉजिकल पिरामिड्स के चार्ट बनाने के निर्देश हैं परन्तु इकॉलॉजी के अध्याय कहीं भी शामिल नहीं हैं। इसी प्रकार मेटाबोलिक पाथवेज़ के चार्ट बनाने हेतु भी कहा गया है परन्तु फिज़ीयोलॉजी पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है। इन हालातों में ये प्रोजेक्ट कार्य वैसे ही पूर्ण होंगे जैसे कई स्कूलों में किताबों की मदद से नकल कर लिखवा दिए जाते हैं। इतना बड़ा पाठ्यक्रम पढ़ने के बाद सम्भव है कि प्रोजेक्ट कार्य में छात्र-छात्राओं की कोई रुचि ही न रहे।

बी.एस.सी. प्रथम वर्ष में आए छात्र-छात्राएं किशोरावस्था में ही होते हैं। अतः प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम चाहे वे किसी भी विषय के हों रोचक, सन्तुलित एवं संयमित होने चाहिए। वर्तमान वैश्वीकरण के समय में जब ज़्यादा झुकाव वाणिज्य को ओर होता जा रहा है, ऐसे समय में विज्ञान के पाठ्यक्रमों को काफी संवेदन-शीलता से बनाए जाने की ज़रूरत है। *(स्रोत विशेष फीचर्स)*

डॉ. ओ.पी. जोशी व डॉ. जयश्री सिक्का गुजराती साइंस कॉलेज, इंदौर में वनस्पतिशास्त्र पढ़ाते हैं।